नीना छिब्बर

ई-मेल:neena.chhibbar@gmail.com

तुझ बिन

मैं एक शरीर,निष्प्राण।

आत्मा परमात्मा में विलीन हो गई है।

हिंदू धर्मशास्त्रों के अनुसार दाह संस्कार होना चाहिए, पर मानव जाति ने पेड़ों का नामोनिशान ही मिटा दिया है।

विद्युत दाह भी सम्भव नहीं। पर्यावरण का संतुलन बिगड़ने के कारण सौर ऊर्जा से बिजली भी उतनी बन नहीं पा रही है।

राम जाने क्या होगा!

कुत्ते, चील-कौए और गिद्ध नोंच-नोंच कर चीथ डालेंगे! या।।। यूँ ही पड़ा-पड़ा सड़-गल जाऊँगा।।। हवा, बारिश और धूप के कृपा-प्रसाद से ही मिल पाऊँगा पंचतत्वों में!

प्रदूषित हो-होकर ये सब भी तो कमजोर पड़ गए होंगे। मुझे गलाने-मिटाने में निष्फल ही रहे तब !

हे प्रभु, तुझ तक हम कैसे पहुँचेंगे तुझ बिन?

मोंकी सूत्र

आज बरसों बाद तीनों मोंकी (बंदर कहलाना उन्हें पसंद नहीं) अपने पड़दादा से मिलने जंगल गये।

तीनो आधुनिकता की प्रतिमूर्ति थे, पर आदतें वही थीं। जब घर पहुँचे तो देखा—बाबा, पड़दादा से किसी बात को लेकर राय माँग रहे थे। तीनों को देखकर दोनों अति प्रसन्न हुए। पड़दादा के चेहरे की चमक तो चौगुनी हो गई थी। अभिवादन के बाद बाबा ने पूछा, "नयी दुनिया के क्या हालचाल हैं। तुम्हारे ठाट- बाट देखकर तो लगता है खूब कमाई हो रही है।"

तीनो एक साथ बोले ,"आप लोगों की विरासत को थोड़ा बदलकर आगे चला रहे हैं। बस उसी का प्रताप है। तिकड़ी आपकी मशहूर थी, तिकड़ी हमारी भी मशहूर है।..''

''सो कैसे?'' बाबा ने पूछा।

एक ने कहा, ''मैं एल. टी. (लूज़ टंग) यानी कब, कहाँ, कितनी मात्रा में अनाप-शनाप बोलना है, उसकी कक्षाएँ लेता हूँ।"

दूसरा बोला "मैं भी एल. टी. (लूज़ टैंपर) यानी बेसिर-पैर का क्रोध और उसकी भाषा सिखाता हूँ।"

तीसरे ने कहा, ''मैं इन दोनों से अलग डब्ल्यू. टी. टी. (विदाउॅट टाईम टेबल) यानी बिना समय-सारिणी के कब, क्यों और कैसे काम शुरू और खत्म करना चाहिए के सिद्धांत की कक्षाएं लेता हूँ।"

बाबा और पड़दादा असमंजस में थे—यह कौन सीखता है।

पहले एल.टी. ने कहा, ''बाबा, 'कौन सीखता है' नहीं, यह पूछिए कि नेता, अभिनेता, प्रबंध अधिकारी, दण्डाधिकारी से लेकर दंगा नायक और छात्र... कौन नहीं सीखता है; और अब तो गृहणियाँ भी रुचि दिखा रही हैं। हम तीनों 'मोंकी ब्रदर्स' की विश्व बाजार में खूब माँग है। दुनिया के करीब हर देश में अपनी फ्रेंचाईजीस हैं। आप तो बस, आशीष दीजिए । अब चलते हैं । हमारा विमान लेने आ गया है।''